रात्रिक्लास 18.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद हैं।

जैसे बाप में झाड़ और चक्र का ज्ञान है तुम बच्चों में भी ज्ञान है। वह भी स्वदर्शनचक्रधारी है ,तुम्हारी आत्मा भी स्वदर्शनचक्रधारी है। जैसे यह देहधारी वैसे तुम भी। यह भी संगम पर है तुम भी संगम पर हो। जैसे ब्रह्मा बाप ज्ञान का सागर है वैसे तुम भी हो। सृष्टि का चक्र तुम्हारे बुद्धि में फिरता रहता है। तुम्हारी भी आत्मा ज्ञान का सागर है। झाड़ को जानते हो। आत्मा सतोप्रधान थी ,अभी कम है तो याद की यात्रा से पूरा करते हैं। जब सतोप्रधान बन जाती है तो तुम्हारे में और बाप में कोई फर्क नहीं रहता। बाप टीचर है, तुम भी टीचर हो ना। नॉलेज तो सभी हैं, सिर्फ दैवीगुण चाहिए। बाबा में सभी दैवीगुण हैं। और जैसे वह अपन को अशरीरी समझते हैं, तुमको भी समझना है। बच्चों को यह निश्चय है हम अशरीरी हैं। जैसे बाबा में ज्ञान है चक्र का वैसे तुम्हारे में भी है। सिर्फ उन जैसे सतोप्रधान नहीं हो। बैटरी पूरी चार्ज न हुई है। पूरी होने तक दैवीगुण भी धारण कर लेंगे। तुम धारणा करते–2 आखरीन यह बन जावेंगे। एमऑब्जेक्ट तो है। पढ़ाने वाला भी कहते हैं मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूँ। बाप जैसे सम्पूर्ण बन जावेंगे। पहले हम सच्चे सम्बन्ध में थे फिर रावण राज्य में झूठे सम्बन्ध में आये। अभी फिर सच्चे सम्बन्ध में जाना है। बाप ही की श्रीमत है। रावण की है झूठी मत। सभी मनुष्य गदहे मिसल हैं। गदहे बोझ उठाते हैं ना। तो मनुष्यों पर विकर्मों का बोझ है। उनको साफ करना है। ज्ञान और भक्ति में बहुत फर्क है। बोझ उतर जाता है फिर शरीर भी भासता नहीं है। शरीर भी पुराना है। धोबी मैला ले जाता है, साफ कर ले आते हैं। बाबा भी धोबी है ना, सुनार भी है। कहते हैं तुम्हारी आत्मा को साफ करता हूँ फिर शरीर भी शुद्ध हो जाता है। कपड़ा साफ हो जाता है। अनेक नाम हैं। रावण राज्य में कोई से सुख नहीं मिल सकता। पहले–2 कोस करना, काम कटारी चलाना सीखते हैं। साधु लोग भी कब कहते हैं यह छोड़ते जाओ। तुम बच्चों की बुद्धि रामराज्य और रावण राज्य है। मनुष्यों ने कल्प की आयु ही लम्बी लगा दी है। तो सभी बातें भूल गये हैं। बच्चों को सर्विस तो करनी है। सर्विस के लिए ट्रान्सलाइट चित्र अच्छी है। फिर बड़े आदमी भी चक्र लगाये आवेंगे। रिगार्ड तो मिलेगा ना। फिर आस्ते–2 क(र)ते तुम्हारी महिमा बढ़ती है। बाप तो बेहद का बादशाह है ना। डायरैक्शन देते हैं, पैसे का तो ख़याल नहीं। वह तो समर्थ है। शहनशाह को हुण्डी भरनी ही है। सभी प्रबन्ध हो जावेंगे। कोई बड़ी बात नहीं। पैसा का तो कब ख़याल न करना चाहिए । सर्विस की वृद्धि होती रहेगी। उस तरफ न जाकर तुम्हारे पास आ जावेंगे। यहां मुक्ति तो कोई की होती नहीं। वह सभी हैं भक्तिमार्ग के। बच्चों को बहुत सहज करके समझाया है फिर भी धारण नहीं कर सकते हैं। यह स्कूल है ना। दिन–प्रतिदिन मोस्ट ईज़ी लगता जावेगा। जितना योग में मदद उतना औरों (की) भी मदद मिलती जावेगी। सारा है योगबल। अच्छा, फिर भी याद में बैठो। यह आबू तो बहुत बड़ा तीर्थ बन जावेगा; क्योंकि जड़ और चैतन्य यहां हैं। मनुष्य देख बड़ा वण्डर खावेंगे। बाबा को ख़याल आता है लिख देवें सच्चा चैतन्य दिलवाला मन्दिर। वह है जड़। यह तो बच्चे जानते हैं। झाड़ का भी राज़ समझाया है। इनका फाउन्डेशन है नहीं। तो बाकी सारा झाड़ खड़ा है। डार–टार कितने हैं। कोई बड़े ,कोई छोटे। डार–टार लटक–2 धरती में जाकर जैसे थुर बन जाते हैं। फाउन्डेशन गुम हो गया है। जब फाउन्डेशन था तो डार–टारियां नहीं थी। अभी डार–टारियां हैं तो थुर नहीं। अभी फिर मैं फांउन्डेशन लगा रहा हूँ। विघ्न भी अनेक प्रकार के इस ज्ञान यज्ञ में पड़ते हैं। आहुति पड़ती है। बाप कहते हैं तुम जब तैयार हो जावेंगे फिर तो इस जंगल को आग लगेगी। फूलों के बगीचों को आग नहीं लगती है। कैसे–2 बम्स बनाते हैं। उनमें गैस आदि भरते हैं तो कहां भी गिरे तो और ही मनुष्य खतम हो जाये। आग लग जाये। तूफान भी फिर आग को मदद करती है। इसको कहा जाता है ईज़ी मौत। हार्टअटैक ईज़ी मौत है। दुःख नहीं होता। तुम बच्चों को प्योर बनने का पुरुषार्थ भी ज़रूर करना है। योग पर बहुत अटेन्शन देना है। बाप कहते हैं मैं तुमको युक्ति बताता हूँ पावन बनने की। नंगे आये थे, नंगे जाना है। बच्चों को ही बच्चे–2 कह बात करते हैं। वह है सभी आत्माओं का पिता। बाप नई प्रजा रचते हैं। यह पवित्र होते हैं। विकार में नहीं जाते। ओमशान्ति।